Siachen Glacier

Siachen Glacier – 'the highest battle field in the world' is the land of extreme hostile climatic conditions, treacherous terrain with savage mountains. For the troops serving there, 'courage and fortitude' is the norm. In the local Balti language 'Sia' stands for 'Wild Rose' and 'Chen' means 'place'. Wild Roses are found aplenty near the snout of the glacier and in its lower valleys. It is these roses which give the Glacier its name 'Siachen - the place of Roses'.

The Siachen Glacier emanates from Indira Col and runs for approximately 76.4 Km in a South-easterly direction to the source of the Nubra River. It is hemmed-in by the Saltoro Ridgeline to the West and Karakoram to the North and East. There are four important passes on the Saltoro Range namely Sia La, Bilafond La, Chulung La and Gyong La. In the South, this sector overlooks the Shyok River Valley, which lies in an East-west configuration. The area is characterised by high altitude mountainous terrain, which is glaciated and remains snow bound throughout the year. The heights in the area are between 12000 and 21000 feet.

Prior to 1984, neither India nor Pakistan had any permanent presence in the area. In the 1970s and early 1980s, Pakistan permitted several foreign mountaineering expeditions to scale peaks on the glacier. This was with a design to reinforce its illegal claim over Siachen. In 1983-84, a force was raised by the Pakistan Army for the occupation and capture of the Saltoro Watershed; this was called the 'Burzil Force' and the Operation was codenamed "Operation Ababeel". However, the Indian Army launched "Operation MEGHDOOT" and defeated the nefarious designs of Pakistan Army by securing the Siachen Glacier.

Operation MEGHDOOT was launched under HQ 26 Sector on 13 April, 1984. HQ 102 Infantry Brigade was raised on 01 March, 1985 and additional troops were deployed on the Saltoro Ridge under Operation MEGHDOOT. The formation was placed under command of 28 Infantry Division from 14 March, 1985 to 20 June, 1991 and reverted to 3 Infantry Division on 21 June, 1991. On 15 February, 2009, the Brigade was placed directly under HQ 14 Corps.

The soldiers who defend the glacier are known as Siachen Warriors. The Siachen Warriors have made innumerable sacrifices displaying selfless devotion to the nation. The Siachen Warriors because of their deeds have been awarded with one Param Vir Chakra, one Ashok Chakra, five Mahavir Chakras, eight Kirti Chakras, thirty five Vir Chakras, thirty Shaurya Chakras, twenty two Yudh Seva Medals, two hundred nineteen Sena Medals and fifty three Mentions in Dispatches.

Several attempts have been made by Pakistan to dislodge Indian troops from their positions. Indian troops in a testimony to their resilience, determination and bravery have thwarted these attempts even at the cost of precious and valuable lives. More than 1050 brave Indian soldiers have attained martyrdom due to weather and enemy actions in this cold and isolated battlefield.

Department of Posts is proud to issue a Commemorative Postage Stamp on Siachen Glacier in honour of these gallant soldiers.

Credits:

Text	:	Based on information received from the proponent
Stamp/ FDC/ Brochure/ Cancellation Cachet	:	Ms. Gulistaan

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts India

सियाचिन ग्लेशियर
SIACHEN GLACIER

विवरणिका BROCHURE

सियाचिन ग्लेशियर

सियाचिन ग्लेशियर– 'विश्व का सबसे ऊँचा युद्ध क्षेत्र' अत्यधिक प्रतिकूल जलवायु और दुर्गम बर्फीले पर्वतों सहित जोखिम भरा भू–भाग है। यहाँ सेवारत सैनिकों के लिए 'साहस और धैर्य' मानदंड हैं। यहाँ की स्थानीय बाल्टी भाषा में 'सिया' का अर्थ 'एक प्रकार का जंगली गुलाब' और 'चिन' का अर्थ 'जगह' है। 'सियाचिन' ग्लेशियर के शीर्ष और निचली घाटियों में जंगली गुलाब बहुतायत में पाए जाते हैं। इन्हीं जंगली गुलाबों की वजह से इस ग्लेशियर को 'सिचाचिन' नाम से जाना जाता है।

सियाचिन ग्लेशियर इंदिरा कोल से आरंभ होकर दक्षिण–पूर्वी दिशा में लगभग 76.4 किलोमीटर तक नुब्रा नदी के उद्‌गम स्थल तक फैला हुआ है। यह ग्लेशियर उत्तर तथा पश्चिम में सालटोरो रिजलाइन और पूर्व में काराकोरम के बीच स्थित है। सालटोरो पर्वतमाला काराकोरम पर्वतमाला की एक उपश्रेणी है जिस पर सिया ला, बिलाफ़ोंड ला, चुलुंग ला और ग्योंग ला नामक महत्वपूर्ण दर्रे हैं। दक्षिण में सियाचिन से श्योक नदी को देखा जा सकता है जो पूर्व पश्चिम की पर्वतीय ढलानों के बीच बहती है। यह क्षेत्र उच्च तुंगता पर्वतीय भू–भाग है जोकि वर्ष भर हिमाच्छादित और बर्फ से ढका रहता है। इस क्षेत्र में ऊंचाई 12000 फुट से 21000 फुट तक के बीच है।

1984 से पूर्व इस क्षेत्र में न तो भारत और न ही पाकिस्तान की स्थायी उपस्थिति थी। वर्ष 1970 से लेकर 1980 के दशक के प्रारंभ में पाकिस्तान ने एक षड्‌यंत्र के तहत सियाचिन ग्लेशियर की चोटियों पर चढ़ने के लिए कई विदेशी पर्वतारोहण अभियानों को अनुमति दी थी। यह पाकिस्तान का सियाचिन पर गैर–कानूनी हक़ जमाने का तरीका था। 1983–84 में पाकिस्तानी सेना द्वारा सालटोरो वाटरशेड पर कब्जा जमाने के लिए एक सैन्य दल 'बुर्जिल फोर्स' तैयार किया गया और इस सैन्य अभियान का नाम ''ऑपरेशन अबाबील'' रखा गया। हालाँकि इस सैन्य अभियान के उत्तर में भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन मेघदूत' आरंभ किया जिसके परिणामस्वरूप भारतीय सैनिकों ने पूरे सियाचिन ग्लेशियर पर सफलतापूर्वक नियंत्रण हासिल करके पाकिस्तान के नापाक मंसूबों को नाकाम कर दिया।

भारतीय सेना ने ऑपरेशन मेघदूत 13 अप्रैल 1984 को मुख्यालय 26 सेक्टर के अधीन आरंभ किया। मुख्यालय 102 इन्फेन्ट्री ब्रिगेड की स्थापना 01 मार्च, 1985 को की गई थी और ऑपरेशन मेघदूत के तहत सालटोरो रिज पर अतिरिक्त सैन्य दल के रूप में इनकी तैनाती की गई। इस फोरमेशन को 14 मार्च, 1985 से 20 जून, 1991 तक 28 इन्फैन्ट्री डिवीज़न की कमांड के अधीन रखा गया था और 21 जून, 1991 को इस फोरमेशन को 3 इन्फैन्ट्री डिवीज़न की कमांड के अधीन कर दिया गया। 15 फरवरी, 2009 को इस ब्रिगेड को सीधे मुख्यालय 14 कोर के अधीन कर दिया गया।

ग्लेशियर की रक्षा करने वाले सैनिकों को सियाचिन योद्धाओं के रूप में जाना जाता है। सियाचिन योद्धाओं ने राष्ट्र के प्रति निःस्वार्थ देशभक्ति के जज़्बे को प्रदर्शित करते हुए अनगिनत बलिदान दिए हैं। सियाचिन योद्धाओं को उनके कार्यों एवं अदम्य साहस के लिए एक परम वीर चक्र, एक अशोक चक्र, पांच महावीर चक्र, आठ कीर्ति चक्र, पैंतीस वीर चक्र, तीस शौर्य चक्र, बाइस युद्ध सेवा पदक, दो सौ उन्नीस सेना पदक और तिरपन मेंशन इन डिस्पैच से सम्मानित किया गया है।

पाकिस्तान द्वारा भारतीय सैनिकों को उनके स्थान से हटाने के लिए अनेक प्रयास किये जा चुके हैं। भारतीय सैन्य दलों ने अपने सामर्थ्य, दृढ़ संकल्प और बहादुरी का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने अमूल्य जीवन की आहुति देकर पाकिस्तान के नापाक इरादों को नाकाम किया है। इस सर्द और निर्जन युद्धक्षेत्र में बेहद खराब मौसम और दुश्मनों की नापाक हरकतों के कारण 1050 से अधिक बहादुर भारतीय सैनिक शहादत प्राप्त कर चुके हैं।

डाक विभाग इन वीर सैनिकों के सम्मान में सियाचिन ग्लेशियर पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए गौरवान्वित महसूस करता है।

आभार :

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सूचना पर आधारित

डाक टिकट / प्रथम दिवस / आवरण / विवरणिका / विरूपण कैशे : सुश्री गुलिस्ताँ

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य वर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	: 600238
Stamps Printed	: 600238
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00